**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157**
**Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 560-562**

# डॉ0 सुनीता जैन द्वारा रचित कहानी संग्रहों ''पाँच दिन, हम मोहरे दिन रात के'' में संग्रहित कहानियों की मूल संवेदना

**डॉ0 मीनाक्षी शर्मा**
शोध केंद्र, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत।

**प्रस्तावना**

ऐसा माना जाता है कि प्रतिभा जन्मजात होती है। वह मानव मन में संस्कार रूप में निहित होती है जब उन संस्कारों के प्रकट होने का समय आता है, तब वह अनेक रूपों में प्रकट होती है जैसे – कवि, लेखक, चित्रकार, गायक, वैज्ञानिक आदि। ऐसी ही प्रतिभा को अपने में समाहित किए हुए इस संसार में आने वाली नारी है डॉ0 सुनीता जैन। डॉ. सुनीता जैन के व्यक्तित्व एंव उनके रचना संसार पर अपने विचार को अभिव्यक्त करते हुए योगेन्द्रनाथ अरुण कहते है कि ''अग्रेंजी माध्यम से हिन्दी साहित्य में प्रवेश करके बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित होने वाले अनेक साहित्यकारों में युवाकथा लेखिका सुनीता जैन का सृजन मूल्यवान है।''[1]

सुनीता जी लेखन के प्रति अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती है कि ''लिखना मेरे लिए ऐसा ही है जैसे बिना जाने लगातार सांसो का आना-जाना। वह (लेखन) अपने आप आता है जाता है। न मैं उसके सहारे कुछ कर पाती हूँ न वो मेरा विषमताओं से पलायन है। इस बात को दूसरे शब्दों में कहूँ तो मेरा लेखन मेरे भीतर रखा वाद्य है जो जब चाहता है, बजता है और मैं उसे बजाना चाहूँ तो काठ हो जाता है एकदम और मूक।''[2] आप सृजन को वाद्ययंत्र की तरह मानती है और कहती है कि वह स्वतः ही झंकृत होता है। उसके झंकृत होने से रचनाओं का सृजन होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनेकों लेखक-लेखिकाओं ने नारी अधिकार को लेकर कहानियों और उपन्यासों की रचना की। वहीं डॉ0 सुनीता जैन नारी अधिकारों के प्रति अपने विचार इस तरह प्रकट करती है– ''मुझे लगता है कि आज की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जिस तेजी से सजग हुई है उतनी ही तेजी से उसने स्त्री होने की भीतरी शक्ति खो दी है। अस्मिता की हाथापाई में और सशक्तिकरण के उन्माद में आज की स्त्री एक ऐसे दलदल में दिखाई दे रही है। जिससे निकास अभी शायद सम्भव नहीं।''[3] आप भविष्य में नारी शक्ति के उन्माद को एक दलदल की तरह मानती है, जहाँ से नारी का निकास शायद सम्भव नहीं।

जब भी कोई रचनाकार रचना का सृजन करता है, तब वह रचना केवल एक रचना न होकर वह लेखक-लेखिका के मनोभावों की झलक होती है। ऐसे ही मनोभावों और अनुभावों की झलक अपने लेखन में उद्घाटित करती लेखिका डॉ0 सुनीता जैन ने अपने लेखन कार्यो में साहित्य जगत की विविध विधाओं को अपने लेखन कार्य का क्षेत्र बनाया है।

डॉ0 सुनीता जैन अपने व्यक्तित्त्व में सहजता, सौम्यता, उदारता आदि गुणों को समाहित किए हुए हैं। आपका लेखन समाज को एक नवीनतम दृष्टिकोण प्रदान करता है। अपनी रचनाओं के माध्यम से आप युवा वर्ग में एक नवीन कांति का उद्घोष कर रही है व युवा भी आपकी रचनाओं को पढ़कर नवीन उत्साह से पूरित हो रहे हैं। सुनीता जी का लेखन एक नवीन ऊर्जा के साथ शब्द रूप में उभर कर आता है जो उनके लेखन को पाठक हृदय पर विशेष प्रभाव के साथ अंकित करता है।''पाँच दिन'' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों की मूल संवेदनाओं को यहाँ वर्णित किया जा रहा हैः–

(1) **''बाट''**– वर्तमान परिप्रेक्ष्य में माता-पुत्र के रिश्ते समय परिवर्तन के साथ परिवर्तित होते चले जाते है, इस भाव को बड़े ही मार्मिक ढ़ग से लेखिका ने अंकन किया है। किस तरह गुणमाला अपने पुत्र के घर में रहकर भी अजनबी बनी रहती है। अपने ही पुत्र के घर में तिरस्कार की भावना सहन करती गुणमाला अपनी मृत्यु की बाट जोहती रहती है। अपने पुत्र प्रेम को तरसती माता की ममता का उद्घाटन करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

(2) **''पालना''**– पालना कहानी मातृत्वहीन नारी की संतान प्राप्ति की इच्छा को प्रकट करती है। किस प्रकार एक नारी अपने बेटे-बहू के जीवन में बच्ची की किलकारी गूँजाकर उनके जीवन में नवीन खुशियों का संचार करती है। मिसेज नाथ के माध्यम से मातृत्वहीन नारी को बच्चा देकर उसके जीवन को संजाने-संवारने की भावना को उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

(3) **''या इसलिए''**– लड़की की बढ़ती उम्र क्या समाज में नारी की विवशता बन जाती है। नारी मन की इसी भावना का उद्घाटन करती कहानी 'या इसलिए' हैं। कहानी नायिका नीरा के माध्यम से अनमेल विवाह,दूसरी पत्नी,माँ समाज के नये रिश्तों में नारी की अन्तःभावना का दमन और उसकी बढ़ती उम्र के आगे विवाह की विवशता का उद्घाटन करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

(4) **''पाँच दिन''**– माँ अपना सम्पूर्ण जीवन अपने पुत्र और पति प्रेम में व्यतीत करना चाहती है। जब नारी अपने ही पुत्र के घर में उपेक्षित जाती है, उसका वहाँ जीना दुर्भर हो जाता है। इसी भाव को जानकी के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। जानकी अपने बेटे के घर उपेक्षित और तिरस्कृत महसूस करती है। अपनी बहू की बातों को सुनकर तिलमिला जाती है। जानकी का अपने पुत्र के घर में आगामी पाँच दिन निकालना दुर्भर हो जाता है। जानकी के माध्यम से वर्तमान समय में प्रत्येक माँ की दुविधा और पीड़ा को उद्घाटित करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

(5) **''पतन-पुराण''**– महानगरीय जीवन में लोगों के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डालती कहानी पतन-पुराण हैं। किस प्रकार शहरों में संबंध आपसी स्वार्थों के लिए जोड़े और तोड़े जाते है। रेणु के

माध्यम से लेखिका ने शहरी संबंधों में आपसी प्रेम का अभाव, भावात्मक संबंधों के साथ खिलवाड़ आदि भावों का उद्घाटन करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(6) ''तिग्गी''**– 'तिग्गी' एक ऐसी नारी की है जिसका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष में व्यतीत होता है। तिग्गी के माध्यम से नारी की कर्मशीलता, विधवा जीवन पर अपने सतीत्व की रक्षा और अपने बच्चों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी के लिए छूत के अस्पताल में काम करके जीवन जीने की जिजीविषा को उद्घाटित करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(7) ''किधर''**– नारी मन जब किसी भ्रांति के वशीभूत होकर शीघ्र ही बिना विचारे निर्णय कर लेता है,तब प्रश्न उठता हैं कि पति से दूर आकर अब कहाँ जाय? नारी मन के इसी द्वन्द्व को रेखा के माध्यम से उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

**(8) ''नियति''**– नारी की सुन्दरता पुरूषों की नजरों में आकर्षण का केन्द्र रहती है। पुरूष की हीन नजरों से नारी मन सदा ही भय और शंका के द्वन्द्व से ग्रसित रहता है। पुरूष प्रेम के स्पर्श को जानना और उस प्रेम की तलाश और पूर्णता के उपरान्त भी वास्तविक प्रेम की नियति के प्रश्न का उद्घाटन सगुणा के माध्यम से उद्घाटित करना की कहानी की मूल संवेदना है। ''पाँच दिन'' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों में नारी जीवन में आने वाली विविध समस्याओं का मार्मिक अंकन किया गया है।

''बाट'' कहानी में पुत्र प्रेम की चाह की तड़प से व्याकुल माँ है तो, ''पालना'' कहानी में संतान प्राप्ति से रहित माँ की पीड़ा और जानकी द्वारा उसे पूरी करने की स्वार्थ रहित कामना, ''या इसलिए'' कहानी में नारी की बढती उम्र उसकी विवशता है तो, ''पाँच दिन'' कहानी में माँ की उपेक्षा और उसके मन की असहनीय पीड़ा की अभिव्यक्ति है, ''तिग्गी'' कहानी में जिजीविषा को प्रकट करती एक माँ की व्यथा है, ''किधर'' कहानी में बैचेन मन से लिए गए निर्णय से व्याकुल नारी मन के भावों को प्रकट किया गया है तो, ''नियति'' कहानी में नारी मन के भावों भय और शंका को लेखिका द्वारा सफलता के साथ उद्घाटित किया गया है। ''हम मोहरे दिन रात के'' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों की मूल संवेदनाओं को यहाँ वर्णित किया जा रहा हैः–

**(1) बिरथा जनम हमारो– ''बिरथा जनम हमारो''** कहानी एक ऐसी नारी की अन्तःपीड़ा की भावना को प्रकट करती है, जो अपना सम्पूर्ण जीवन पति और बच्चों की सेवा में समर्पित कर देती है। उसके मन की पीड़ा और दर्द को वह कभी किसी के समक्ष प्रकट नहीं करती। अपने पति के आपरेशन करा आने और अपने पति से बच्चे की चाह में तड़पती रहती है। अपने पति के छः बच्चों के पालन-पोषण में वह नारी अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करती चली जाती है। नारी मन में अपने जीवन की निरर्थकता के प्रश्न को उद्घाटित करना ही ''बिरथा जनम हमारो'' कहानी की मूल संवेदना है।

**(2) ''पार्वती जब रोएगी'' –** पार्वती के सम्पूर्ण त्याग, प्रेम, समर्पण के बाद भी अपने पति के साथ न रह पाने और अपनी व्याकुलता न कह पाने वाली नारी पार्वती की कहानी हैं। अपने पति की बेवफाई से अनजान पार्वती अपना जीवन सास-ससुर की सेवा में व्यतीत करती चली जाती है। पुरूष की स्वार्थ लिप्सा को मनीन्द्र के द्वारा,नारी की कभी न खत्म होने वाली इन्तजार की समय सीमा और इन्तजार से उत्पन्न होने वाली नारी मन की अन्तःपीड़ा को पार्वती के माध्यम से प्रकट किया गया है। पुरूष की बेवफाई और नारी मन की पीड़ा को प्रकट करना ही ''पार्वती जब रोएगी'' कहानी की मूल संवेदना है।

**(3) ''कमाई''** – विदेश में रहने वाले विवाहित भारतीय युगल अवध आशा की कहानी हैं। विदेश में इंसानों से ज्यादा पैसों की कीमत हैं। विदेश में कमाई करना अनिवार्य हैं। आशा की विवशता उसे अपने धर्म के विरूद्ध घृणित कार्य करने के लिए बाध्य कर देती है। आशा अपने काम की घृणा उन हरे-हरे अमरीकी डालर के सामने भूल जाती है। 'कमाई' का कोई भी कार्य हो वह अनिवार्य होता है। आशा के माध्यम से ''कमाई'' के लिए विदेश में कार्य करने की बाध्यता को उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

**(4) ''क्लियोपेट्रा वह''–** 'क्लियोपेट्रा वह' कहानी का उद्देश्य ऐतिहासिक पात्र क्लियोपेट्रा के चरित्र पर प्रकाश डालना हैं। क्लियोपेट्रा के चरित्र में गुण-दोषों की तुलना करना है। क्लियोपेट्रा ऐतिहासिक पात्र के माध्यम से वर्तमान समय में रेणु जैसी नारी के चरित्र की तुलना को कथानायिका के विचारों के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। नारी के पुरूष के प्रति समर्पण की भावना कहाँ तक सही है या गलत हैं? कथानायिका द्वारा अपने मन में क्लियोपेट्रा और रेणु के चरित्र में समानता और असमानता का निर्णय ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(5) ''परदेस''**– विदेशी परिवेश में नारी का सम्पर्क जब नाना प्रकार के लोगों से होता है, तब पुरूष के विविध विचारों से उसका परिचय होता है। नारी मन जब अपने प्यार की उपेक्षा सहन नहीं कर पाता तो वह जीवन का अन्त करने की बात सोचने लगता है। नारी मन को एक भावात्मक आधार देने के साथ नवीन जीवन में प्रवेश कराने और जीवन के प्रति नवीन दृष्टिकोण को रूपा के माध्यम से उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

**(6) ''अपराध''**– '**अपराध**' कहानी में बाल मन की सहज भावना और प्रेम को नीग्रो लड़के पीटर और गौरी लड़की जैनी के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। जहाँ बालमन रंग-भेद की नीति को न जानता हुआ अबोध होता है, वहीं पर बालक पीटर को पीट-पीट कर गौरों के द्वारा अधमरा कर दिया जाता है। नीग्रो लड़के पीटर एवं गौरी लड़की जैनी के माध्यम से रंग-भेद नीति को उद्घाटित करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(7) ''तलछट''**– अपने जीवन की पूर्व स्मृतियों में छायी तलछट और उसमें अपने स्व की खोज करती नारी संतोष की कहानी हैं। नारी अपने जीवन में संघर्ष करती हुई आगे बढ़ती चली जाती है। जीवन के विविध पहलुओं को देखती और अनुभव करती नारी संतोष के जीवन में जमी पूर्व यादों की तलछट में अपने अस्तित्त्व की तलाश करने की भावनाओं का उद्घाटन करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(8) ''न कोयला न राख''**– ''**न कोयला न राख**'' ऐसी हिन्दुस्तानी लड़की की कहानी हैं जो विदेश में रहकर अपनी डाक्टरेट की उपाधि की पढ़ाई करने आती है। उसके जीवन में न पूर्णता हैं न अधूरापन है, नारी मन के इसी द्वन्द्व को सुरू के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। सुरू के रात–दिन अपनी इसी अधूरे भाव

की जलन में जलने की भावना को बताया गया है। सुरू के मनोद्वन्द्व की जलन में उसका जीवन न पूर्ण रहा न अधूरा रहा। इसी भाव को 'न कोयला न राख' के माध्यम से प्रकट करना ही कहानी की मूल संवेदना है।

**(9) ''सरसी धरती''** – ''सरसी धरती'' नाजनीन के जीवन की कहानी हैं। जो अपने जीवन में अकेलेपन को पूर्ण करने के लिए रात-दिन तरसती रहती है। नाजनीन के जीवन में प्रेम की प्यास को सरसी धरती की तरह बताया गया है। नाजनीन के जीवन में प्रेम की पूर्णता न जाने कब होगी? प्रेम की तलाश में नाजनीन अपना जीवन व्यतीत करती चली जा रही है। नाजनीन के प्रेम की तड़प और प्यास को उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

**(10) ''द्विधा''** – ''द्विधा' कहानी अमेरिका में रहने वाले भारतीय पुरूषों के मन में स्त्री-पुरूषों के संबंधों की स्वतंत्रता-अस्वतंत्रता को प्रकट किया गया है। कथानायक के द्वारा भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति की विवेचना करना साथ ही साथ पाश्चात्य संस्कृति में नारी–पुरूष के संबंधों और प्रेम भावों को उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है।

**(11) ''मोहरे''** – अपने शीर्षक को चरितार्थ करती कहानी ''मोहरे'' नारी मन में अपने पति के किसी दूसरी औरत के प्रेम में पड़कर अपनी स्वकीया पत्नी को छोड़कर जाने की पीड़ा को अन्तः में दबाकर रखने की भावना को उद्घाटित करती है। लम्बा समय गुजरने के उपरान्त किस्मत पुनः करूणा और रमन को आमने-सामने लाकर अपने मोहरे बनाकर खड़ा कर देती है अपने पति को देखकर नारी मन में एक विक्षोभ उत्पन्न होता है। नारी मन में इसी विक्षोभ को कथानायिका के माध्यम से उद्घाटित करना कहानी की मूल संवेदना है। जब पुरूष अपनी स्वकीया पत्नी का त्याग दूसरी औरत के लिए करता है, तब उस छोड़ी गई नारी के मन की गहन अन्तः पीड़ा को उद्घाटित करती कहानी 'मोहरे' हैं।

''बिरथा जन्म हमारो'' कहानी में नारी मन में अपने जीवन की निरर्थकता के प्रश्न को उठाया गया है, ''पार्वती जब रोएगी'' कहानी में पुरुष की बेवफाई और नारी मन की पीडा को बताया गया है। ''कमाई'' कहानी में विदेश में कार्य करने की बाध्यता को आशा के द्वारा प्रकट किया गया है, ''क्लियोपेट्रा वह'' ऐतिहासिक पात्र के माध्यम से कथा नायिका द्वारा रेणु और क्लियोपेट्रा के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। ''परदेस'' कहानी में विदेशी परिवेश में नारी के प्रति पुरुषों के विविध विचारों को प्रकट किया गया है, ''अपराध''कहानी में विदेश में रंग–भेद की नीति को काले रंग के लड़के पीटर और गौरी लड़की जैनी के माध्यम से स्पष्ट किया गया है, ''तलछट'' कहानी में जीवन की पूर्व स्मृतियों में छायी तलछट और उसमें स्व की खोज को सन्तोष के द्वारा उद्घाटित किया गया है। ''न कोयला न राख'' कहानी में जीवन की पूर्णता और अपूर्णता को सुरु के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। ''सरसी धरती'' कहानी में नाजनीम के प्रेम की तड़प और प्यास को उद्घाटित किया गया है। ''द्विधा'' कहानी में अमेरिका में रहने वाले स्त्री–पुरुषों के संबन्धों की स्वतंत्रता और अस्वतंत्रता को उद्घाटित किया गया है। ''मोहरे'' कहानी में छोड़ी हुई नारी के मन की अन्तः पीड़ा को लेखिका द्वारा भावात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है, जो पाठकों पर अपना विशेष प्रभाव अंकित करती है।

## निष्कर्ष

डॉ. सुनीता जैन द्वारा रचित तीन कहानी संग्रह और कुछ ''आंरभिक कहानिया'' शीर्षक नाम से सुनीता जैन अब तक भाग–2 में संग्रहित की गयी है। सभी संग्रहों की कहानियाँ नारी मन के विविध भावों का उद्घाटन करती है। प्रस्तुत शोधपत्र में ''पाँच दिन'' और ''हम मोहरे दिन रात के'' कहानी संग्रहों में संग्रहित कहानियों की मूल संवेदनाओं को उद्घाटित किया गया है, जिसमें नारी, माँ, प्रेमिका, स्व की खोज करने वाली, छोड़ी हुई स्त्री, कर्तव्यपरायण, सहनशील आदि रुपों में नजर आती है।

सुनीता जी ने नारी को केन्द्र में रखकर ही अपने रचना संसार को पूर्ण किया है। नारी ही नारी मन के भावों, पीड़ा, खुशी, दायित्व, प्रेम की चाह, नारी जीवन की पूर्णता आदि को गहराई से समझती है और उसे साकार रुप प्रदान करती है। नारी जीवन के इन्हीं भावों को केन्द्र में रखकर सुनीता जी ने नारी के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण को दृढ़ता के साथ पाठको के समक्ष रखा है।

## सन्दर्भ

1. डॉ0 सुनीता जैन, सुनीता जैन अब तक – 2, पृ0– 251
2. समावर्तन अंक – 4, जुलाई 2008, पृ0– 31
3. समावर्तन अंक – 4, जुलाई 2008, पृ0– 23